॥ ॐ श्री परमात्मने नमः ॥

धन्वन्तरि पीठ आयुष ग्राम (न्यास)

सूरजकुण्ड रोड (आयुष ग्राम मार्ग) चित्रकूट धाम (उ.प्र.)

सामूहिक उपनयन संस्कार

शुभ संवत् 2081 आषाढ़ शुक्ल तृतीया (8 जुलाई 2024, सोमवार)

पूर्वान्ह 08 बजे से 02 बजे तक

भण्डारा

अपरान्ह 02 बजे से सायं 05 बजे तक

श्रीमान/श्रीमती _____

_____

_____

आयोजकः आयुष ग्राम गुरुकुलम्

स्थलः धन्वन्तरि पीठ आयुष ग्राम (न्यास), सूरजकुण्ड रोड (आयुष ग्राम मार्ग), चित्रकूट धाम (उ.प्र.) 210205

सम्पर्क सूत्रः 8795440097, 8471036228

उन्नति का आध्यात्मिक साधन : उपनयन संस्कार

सभी चिन्तित हैं कि द्विजातियों में गिरावट आती जा रही है, बुद्धि, विद्या, तेज, बल घटता जा रहा है और तो और द्विजातियों की नई पीढ़ी संघर्ष से पीछे हट रही है दायित्वों से विमुख हो रही है तथा उनमें प्रमाद, नशा, गलत संगति और गलत खान-पान का प्रभाव बढ़ रहा है। यह शास्त्रीय प्रमाण है कि यज्ञोपवीतधारी द्विज बालक अपने नित्य कर्मों (संध्योपासन , गायत्री जपादि) को करता हुआ जब अपने क्षेत्र में आगे बढ़ता है तो ब्रह्म तेज से विद्या, बल और धनार्जन मार्ग में सफलता मिलती है। शास्त्र की आज्ञा है कि कोई द्विज देवकार्य, पितृकार्य (संध्योपासन, गायत्री जप, देवपूजन, पिण्डदान, तर्पण) का अधिकारी होता है श्रेष्ठ उपनयन 05, 06 और 08वें वर्ष में। यही कारण है कि आज कई द्विज बालक देव पूजन आदि तो करते हैं पर उसका समुचित फल नहीं प्राप्त कर पाते क्योंकि उपनयन संस्कार विहीन रहते हैं।

– जब वह शिखा और यज्ञोपवीत धारण करे –

भगवान ने स्पष्ट कहा है यज्ञ दान तप: कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् ।। श्रीमद्भगवतगीता 18/5 ।। अर्थात्, यज्ञ, दान, तप जैसे कर्म कभी भी किसी के द्वारा भी त्याग करने योग्य नहीं होते। भगवान् मनु का वचन है कि ब्राह्मण बालक को विशेष ब्रह्मतेज सम्पन्न बनाने की इच्छा हो तो पाँचवें वर्ष में, बल चाहने वाले क्षत्रिय बालक का छठवें वर्ष और धन चाहने वाले वैश्य बालक का आठवें वर्ष में यज्ञोपवीत कर देना चाहिए।

ब्रह्मवर्चसकामस्य कार्य विप्रस्य पञ्चमे। राज्ञो बलार्थिनः षष्टे वैश्यस्येह्यार्थिनाऽष्टमो।। म. स्मृति।।

आचार्य पारस्कर ने ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य बालक के लिए जन्म से अथवा गर्भ से क्रमश: 8वें, 11वें और 12वें वर्ष में उपनयन का मुख्य काल बताया है। यदि किसी कारणवश मुख्य काल में उपनयन संस्कार न हो पाये तो ब्राह्मण बालक का 16वें, क्षत्रिय बालक का 22वें और वैश्य बालक का 24वें वर्ष तक उपनयन संस्कार अवश्य हो ही जाना चाहिए। (पा.गृ.सू. 2/5/36-38) उपनयन संस्कार का यह समय व्यतीत होने पर द्विज बालक सपतित या सावित्रीक कहलाता है उसके द्वारा किया गया पूजा-पाठ निष्फल और आशास्त्रीय होता है शास्त्र यहाँ तक कहते हैं कि सावित्रीपतित व्रात्या: सर्वधर्मबहिष्कृता: (शंखस्मृति 2/19) कि सावित्री पतित या व्रात्य सभी धर्मों से बहिष्कृत है।

नैतैरपूतैर्विधिवदापद्यापि हि कर्हिचित्। बाह्यान् यौनांश्च सम्बन्धान्नाचरेद् ब्राह्मणैः सह।। म. स्मृति 2/40 ।।

अर्थात् जिनका उपनयन काल बीत गया है और उसके बाद भी प्रायश्चित पूर्वक उपनयन संस्कार कर यज्ञोपवीत धारण नहीं किया वह ब्राह्मण पतित सावित्रीक कहलाता है ऐसे पतित ब्रात्या जनों से न तो वेद की शिक्षा ले और न विवाहादि सम्बन्ध करें। समय निकल जाने के बाद भी उपनयन संस्कार के संबंध में हमारे पूर्वजों और ऋषियों ने कहा है कि प्रायश्चित का संकल्प कर यज्ञोपवीत महामना पं. मदन मोहन मालवीय कहते थे कि किसी कारणवश कालका लोप हो जाय परन्तु कर्म का लोप नहीं करना चाहिए किन्तु आज द्विज समाज को इस ओर करने वाले और मार्गदर्शन वाले सत्पुरुषों का अभाव सा हो गया है। कुछ लोग विवाह की प्रतीक्षा तो कुछ लोग दहिनवारा और न जाने कैसे-कैसे अवलम्बन लेकर बालकों का उपनयन संस्कार न कर उसे ब्रह्मतेज, बुद्धि बल से वंचित कर रहें हैं। जिन परिवारों में समय से उपनयन संस्कार करने की उत्तम परम्परा रही है अब तो वे परिवार भी इससे दूर हो रहे हैं जिसके दुष्परिणाम भी दिखाई दे रहे हैं। भारतीय वाङ्मय साक्षी है कि भगवान् श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण के भी उपनयन संस्कार हुये हैं और उपनयन के नियमों का पालन कर वे उच्च चेतना को प्राप्त हुये हैं। उनका भव्य वर्णन भारतीय वाङ्मय में प्राप्त होता है।

भये कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता।। (रामचरित मानस 1/203/4)

इस प्रकार यज्ञोपवीत संस्कार कोई सामान्य संस्कार नहीं बल्कि ब्रह्मतेज, विद्या, बल, धनप्राप्ति का मार्ग देने वाला और समस्त देव एवं पितृकर्मों को कर सकने की योग्यता प्रदान करने वाला महान् संस्कार है। तो आइये हम सब मिलकर अपने बालकों के कल्याणार्थ, उत्थान, विकास के लिए बालकों का उपनयन संस्कार करें तथा उन्हें ब्रह्मतेज, विद्या, बल, धनप्राप्ति मार्ग से विभूषित करें। इसके लिए धन्वन्तरि पीठ; आयुष ग्राम (न्यास) चित्रकूट धाम द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी 26 अप्रैल 2024, शुभ संवत् 2081 वैशाख कृष्ण पक्ष द्वितीया, शुक्रवार को द्विज बालकों के उपनयन संस्कार का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें आपकी सहभागिता प्रार्थनीय है।

भगवान् के शब्दों में संध्या और जप महत्व!!

– श्री महाभारत पु. आश्वमेधिक पर्व. वैष्णवधर्म पर्व 92।।

उपनयन संस्कार के पश्चात द्विज संध्योपासना और जप का अधिकारी हो जाता है उसकी फलश्रुति इस प्रकार है–

ब्राह्मणश्चैव यो भूत्वा संध्योपासनवर्जितः।
वृथा जन्मान्यथैतेषां पापिनां विद्धि पाण्डव।।

जो ब्राह्मण होकर भी संध्योपासन नहीं करते, उनका जन्म व्यर्थ है और उन्हें पापी जानो।

* संध्या में भगवान् विराजते हैं!! *

तेषां तु पावनायाहं नित्यमेव युधिष्ठिरा
उभे संध्येऽधितिष्ठामि ह्यस्कन्नं तद्व्रतं मम्।।

भगवान् कहते हैं युधिष्ठिर! अपने भक्तों को पवित्र करने के लिए मैं दोनों समय की संध्या में विराजमान रहता हूँ। यह मेरा नियम कभी खण्डित नहीं होता ।

सायं प्रातस्तु ये संध्यां सम्यग्नित्यनुपासते।
नावं वेदमयी कृत्वा तरन्ते तारयन्ति च।।

जो द्विज प्रातः- सायं विधिवत् नित्य संध्योपासन करते हैं वे वेदमयी नौका के सहारे उत्थान तो पाते ही हैं और दूसरों का उत्थान करते हैं

यो जपेत् पावनीं देवीं गायत्री वेदमातरम्।
न सीदेत् प्रतिगृह्णानः पृथिवीं च ससागराम्।।

जो विप्र गायत्री का जप करता है वह समुद्र पर्यन्त पृथ्वी का दान लेने पर भी प्रतिग्रह दोष से ग्रस्त नहीं होता। क्योंकि गायत्री वेद माता हैं और अत्यन्त पवित्र हैं।

* कोई ग्रह हानि नहीं कर पाते *

ये चास्य दुःस्थिता केचिद् ग्रहाः सूर्योदयो दिवि।
ते चास्य सौम्या जायन्तेशिवाः शुभकरास्तथा

जो द्विज नित्य गायत्री संध्या करते हैं तो सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, राहु, केतु आदि कोई भी ग्रह अशुभ स्थान में रहकर भी उसका अनिष्ट नहीं कर पाते बल्कि जप के प्रभाव से शांत, शुभ और कल्याणकारी फल देने वाले हो जाते हैं।

यत्र तत्र स्थिताश्चैव दारुणाः पिशिताशनाः।
घोर रूपा महाकाया धर्षयन्ति न तं द्विजम्।।

संध्योपासन में गायत्री जप करने वाले द्विज का अत्यन्त क्रूर, भयंकर पिशाच भी कुछ नहीं बिगाड़ पाते।

यथा पुष्पे मधु गृह्णन्ति षट्पदाः।
एवं गृहीत सावित्री सर्ववेदे च पाण्डव।।

जैसे भौंरा खिले हुये पुष्पों से उनके सारभूत मधु को ग्रहण करते हैं उसी प्रकार सम्पूर्ण वेदों से उनके सारभूत गायत्री का ग्रहण किया गया है।

सहसापरमां देवीं शतमध्यां शतावराम्।
सावित्रीं जप कौन्तेय सर्वपापप्रणाशिनीम्

भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं हे युधिष्ठिर! प्रतिदिन एक हजार गायत्री मंत्र का जप उत्तम होता है। सौ मंत्र का जप मध्यम तथा दस मंत्र का जप कनिष्ठ होता है।

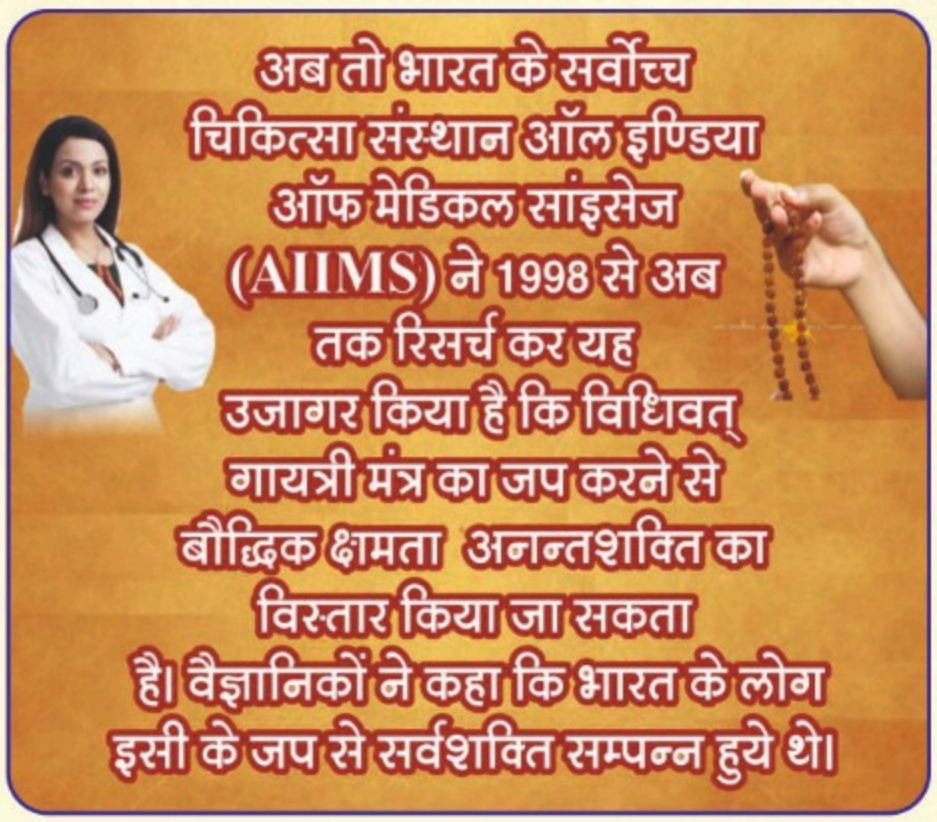

!! कार्यक्रम विवरण !!

उपनयन संस्कार

शुभ संवत् 2081 आषाढ़ शुक्ल तृतीया (8 जुलाई 2024, सोमवार)

पूर्वान्ह 08 बजे से 02 बजे तक

भण्डारा

अपरान्ह 02 बजे से सायं 05 बजे तक

!! कार्यक्रम स्थल !!

धन्वन्तरि पीठ आयुष ग्राम (न्यास), सूरजकुण्ड रोड (आयुष ग्राम मार्ग) चित्रकूट धाम (उ.प्र.) 210205

धन्वन्तरि पीठ : आयुष ग्राम का संक्षिप्त परिचय

भारत के प्रमुख तीर्थों में से चित्रकूट धाम एक प्रमुख तीर्थ माना जाता है। यहाँ प्रभु श्रीराम लक्ष्मण और माँ सीता का नित्य निवास है।

दशाब्दी पूर्व ईश्वरीय प्रेरणा से तपोनिष्ठ द्विज, वैदिक चिकित्सा के प्रख्यात आचार्य डॉ. मदनगोपाल वाजपेयी अपनी जन्मभूमि पनगरा (बाँदा) से चित्रकूट आकर सूरजकुण्ड रोड, (आयुष ग्राम मार्ग) झपोला पहाड़ियों के मध्य प्राकृतिक, शांत और पवित्र स्थान वैदिक विधि विधान से धन्वन्तरि पीठ आयुष ग्राम (न्यास) और आयुष ग्रामेश्वर महादेव आयुष विहारी श्रीराम, आयुष गोपाल श्रीकृष्ण, आयुषनंदिनी दुर्गा, भगवान धन्वन्तरि और आयुष गिरिधारी हनुमान की स्थापना की तथा अपनी जन्मभूमि में चल रहे सभी प्रकल्पों को इसमें समाहित कर दिया। इसके पूर्व तक इस निर्जन स्थान के सामने से निकले सम्पर्क मार्ग से शाम के बाद राजहनी और लूटपाट करने वालों के भय से जहाँ में निकलना मुश्किल था। यहाँ जल का अभाव तो था ही तथा एक भी फलदार और छायादार वृक्ष नहीं थे।

आचार्य डॉ. मदनगोपाल वाजपेयी, बी.ए.एम.एस., साहित्यायुर्वेदरत्न, एन.डी., एम.ए. (संस्कृत), एम.ए. (दर्शन), एल-एल.बी., विद्यावारिधि (आयुर्वेद) तथा आयुषरत्न, आयुष भूषण, आयुर्वेद शिरोमणि आदि विविध सम्मान से सम्मानित तथा कई पुस्तकों के लेखक, साहित्यकार, पत्रिकाओं के सम्पादक हैं।

आपने आयुष, आयुर्वेद और सनातन धर्म के कई संगठनात्मक पदों के प्रमुख पद को भी सुशोभित किया। सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं में प्रशासनिक पदों को भी धारण किया। सनातन धर्म, संस्कृति, वैदिक विज्ञान, आयुर्वेद, आयुष के विकास, संवर्धन हेतु निरंतर चिन्तनशील और कार्यरत हैं।

आचार्य डॉ. मदनगोपाल वाजपेयी जो हमारे पथ प्रदर्शक, ज्ञान प्रणेता और जीवन जीने की कला से ईश्वरीय मार्गदर्शक हैं। जिन्हें हम सब गुरु जी कहते हैं ने सनातन हिन्दू वैदिक धर्म के संरक्षण, संवर्धन हेतु सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त इण्टर मीडिएट तक आयुष ग्राम गुरुकुलम्, देशी गोमाताओं के संरक्षण, गोसेवा पूजा हेतु ''धन्वन्तरि आयुष ग्राम गौसेवालय'' तथा पीड़ित मानवता की सेवा के लिए बहिरंग, अंतरंग सुविधायुक्त ''आयुष ग्राम चिकित्सालय'' की स्थापना की।

निरन्तर इस स्थान में वृक्षारोपण कर भूमि को हरा-भरा किया। सनातन धर्म की ध्वजा को उठाकर उन्होंने गुरुकुलम् तथा अन्ते:वासी सभी सेवादारों तक में संध्योपासन, मंत्र जप, भगवन्नाम जप की परम्परा डाली, श्रीरामचरित मानस, श्रीमद्भगवद्गीता, वाल्मीकि रामायण, श्रीमद्भागवत महापुराण, शिव पुराण, उपनिषदों के स्वाध्याय और नियमित पठन-पाठन का नियम बनाया। केन्द्रीय पुस्तकालय की स्थापना कर चारों वेद, अठारह पुराणों को प्रतिष्ठित कराया। प्रतिवर्ष संस्कारशालाओं का संचालन भी कराया। उन्होंने प्याज, लहसुन जैसे तामसी आहार को इस तपोभूमि में निषिद्ध किया। यहाँ के सभी अन्ते:वासीजन इस नियम का कड़ाई और श्रद्धा से पालन करते हैं। दोनों संध्याओं में अग्निहोत्र, पूर्णिमा को सम्पूर्ण गीता पाठ से होम, आयुष ग्रामेश्वर महादेव का नित्य रूद्राभिषेक और प्रात: सायं आरती पूजा का नियम चल पड़ा। यहाँ की सकारात्मक ऊर्जा का प्रत्यक्ष अनुभव यहाँ की भूमि में प्रवेश करते ही सभी को होने लगता है।

आहार से शरीर और मन बनता है, आहार शुद्धि के उद्देश्य से आयुष ग्राम के पूरे परिसर को रासायनिक खाद और रासायनिक कीटनाशक से मुक्त रखा, केवल गो आधारित और जैविक तरीके से कृषि, सब्जी-भाजी का उत्पादन प्रारम्भ कराया। गोमाताओं को भरपूर आहार, भरपूर पोषण देना यहाँ का नियम है इसीलिए यहाँ के सभी गोवंश हृष्ट-पुष्ट और प्रसन्न रहते हैं।

पूज्य गुरु जी सम्वत् 2079 सन् 2022 के चतुर्मास व्रत के उपरान्त अब गृहस्थ आश्रम का त्याग कर वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर निष्काम कर्मयोग में प्रवृत्त हैं।

घर-घर में सत्कर्म हो, सभी भक्तिमान्, सभी सात्विक ऊर्जा, तेज, बल, बुद्धि और स्वास्थ्य से सम्पन्न हों इसी उद्देश्य और भावना से हमारे गुरु जी प्रभु श्रीराम जी के तपोस्थली से चिकित्सा, गोसेवा, सनातन धर्म, संस्कार सेवा, गुरुकुलम् पद्धति से शिक्षा एवं साहित्य सेवा करते जा रहे हैं।

- आचार्य शिवसागर सिंह
प्रभारी प्रधानाचार्य
आयुषग्राम गुरुकुलम्

www.ayushgram.org
ayushgramchikitsalay